ॐ नमः शिवाय्

# रत्नों व दुर्लभ वस्तुओं से बदले तकदीर

नक्षत्र ज्योतिष एवं रत्न केन्द्र

लेखक व सम्पादक : अमित कालरा, ज्योतिषाचार्य

सी-10, राजेन्द्र नगर, नाथ नगरी बरेली मो. 9897816012

Web.: www.astroamit.in


मूल्य : 100/- मात्र

श्री भैरव बाबा जी के चरणों में सादर समर्पित

ॐ नमः शिवाय्

# दो शब्द

प्रिय साथियों,

मैंने काफी समय से जो ज्योतिष का अध्ययन किया है और बाबा शिव की कृपा से रत्नों आदि के विषय में जो ज्ञान प्राप्त किया है वो मैं आप सभी को बांटने के प्रायोजन से ये छोटी सी किताब में लिख रहा हूँ। इसमें मेरा मुख्य उद्देश्य, फोकस रत्नों की तरफ ही है वैसे ज्योतिष में ग्रह शान्ति भाग्य वृद्धि के लिये रत्नों के अलावा भी बहुत तरीके है लेकिन उसमें मैंने रत्नों आदि को अधिक महत्व दिया है वैसे भी प्राचीन समय में ज्योतिषिय उपायों में चार तरीके ही प्रचलित थे- 1. मन्त्र जाप इसमें यज्ञ, हवन, व्रत आदि भी आते थे जो मुख्यतः ब्राह्मण वर्ग ही करता था दूसरा रत्न, मणिया धारण करना ये सामान्यता क्षत्रिय वर्ग जो खजाने का मालिक था। वो करता था। तीसरा दान आदि जैसे कुआं खुदवाना धर्मशाला बनवाना आदि ये व्यापारी वर्ग यानि वैश्य समुदाय द्वारा किया जाता था चौथा टोने टोटके जैसे सुअर, शेर का दांत पहनना या रात में चौराहा आदि पर क्रिया करना जिसमें अत्यन्त साहस की जरूरत थी ये शुद्र वर्ग करता था परन्तु वर्तमान में समय बदल चुका है जाति व्यवस्था भी खत्म ही है हर व्यक्ति अपनी सार्मथ्य अनुसार रत्न खरीद सकता है तो रत्नों का प्रचलन सर्व समाज में हो चुका है अतः मेरा ध्येय भी रत्नों, द्वारा ही ग्रह सम्बन्धित उपायों के निराकरण और भाग्य बृद्धि में ज्यादा है और बाबा शिव की कृपा से मुझे इसमें सफलता भी मिली है मिल रही है।

अब आप मेरी इस पुस्तक को पढ़कर लाभ उठायें। सर्वज्ञानी तो कोई भी नहीं है अतः मुझसे इस पुस्तक को लिखने में जो त्रुटियां रह गयी हो उसके लिये क्षमा करें।

ज्योतिषाचार्य
अमित कालरा

# भाग्य वृद्धक सामिग्रियां

## पारद शिवलिंग

महादेव भगवान शिव की महिमा अपार है। उन्होंने स्वयं विष पीकर सृष्टि की रक्षा की वे सभी जीवों का कष्ट हरने वाले हैं इसलिये भगवान शिवशंकर भोलेनाथ के ही शरीर के अंग पारद को दिव्य माना गया है। पारद से बने शिवलिंग की पूजा का विशेष महत्व है। यह शिवलिंग स्वयं सिद्ध होता है इसकी पूजा से भगवान शिव शीघ्र प्रसन्न होते हैं। केमद्रम दोष, पितृ दोष, कालसर्प दोष, सर्वश्राप अथवा राहू-केतु के अशुभ योग के निवारण के लिये पारद शिवलिंग को अपने मन्दिर में स्थापित करें व इसकी नियमित पूजा करें-

*"As indicated in the Scripures, Ravna was Rassiddha Yogi (Chemical Technologist) he had performed pooja of Parad Shivlinga and had pleased Lord Shiva and therefore he had become successfull to make his town covered with gold.*

## दक्षिणावर्ती शंख

दक्षिणावर्ती शंख बहुत ही कम मात्रा में प्राप्त होते हैं दक्षिणावर्ती शंख उन शंखों को कहते हैं जिनका पेट दाहिनी तरफ खुलता है। समुद्र मन्थन में जब यह शंख निकला तो भगवान विष्णु ने इसे अपने दाहिने हाथ में धारण किया था इसलिये यह भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी जी का प्रिय पात्र है। इसलिये भगवान को स्नान कराने के हेतु दाहिनावर्ती शंख में जल भरकर कराया जाता है इसमें जल भर कर सूर्य भगवान पर भी चढ़ाया जाता है। दक्षिणावर्ती शंख धनदायक तथा आर्थिक समृद्धिकारी होता है। ऐसी मान्यता है कि जिस घर में दक्षिणावर्ती शंख की पूजा की होती है वहां लक्ष्मीजी का वास होता है और लक्ष्मी जी खुश होकर पूजा करने वाले की आर्थिक समस्याओं को दूर करके उन्हें धनवान और आर्थिक समृद्धिकारी बना देती है।

अगर किसी व्यक्ति की पत्रिका में "क्रेमद्रम योग" का योग निर्माण हो रहा है तो उसे अवश्य दक्षिणावर्ती शंख को स्थापित करना चाहिये।

## गौमती चक्र

गौमती नदी में प्राप्त इन चक्रों का ज्योतिष में बड़ा महत्व है। रोगमुक्ति हेतु इन चक्रों को तांबे के पात्र में रखे तथा पानी भरकर पूरी रात ढक्कर रख दें। प्रातः काल चक्र निकालकर खाली पेट इस पानी को

पीया जाये। उदर विकास में बहुत लाभकारी है। धन वृद्धि हेतु इन चक्रों पर केसर अथवा सिन्दूर का टीका लगाकर लक्ष्मी के मंत्र का जाप करें तथा तिजोरी या अलमारी में रख

## स्फटिक की माला

स्फटिक को हीरे का उपरत्न माना गया है इसलिये इसे शुक्र रत्न भी कहते हैं। स्फटिक को बिल्लौर, कांचमणि, बर्फ का पत्थर भी कहते हैं यह एक पारदर्शी रत्न हैं स्फटिक पहाड़ों पर बर्फ के नीचे विभिन्न छोटे-छोटे टुकड़ों के रूप में पाया जाता है यह बर्फ के समान पारदर्शी पन लिये सफेद रंग का रत्न होता है स्फटिक पत्थर को काट-तराश कर बहुत सी डिज़ाईन की मालायें, श्री यंत्र आदि बनायें जाते हैं इसके बनाये गये धार्मिक खण्डों की पूजा अर्चना कर विशेष महत्व है। स्फटिक की माला बहुत ही ज्यादा शुद्ध तथा आध्यात्मिक एवं शीतवयी जानी जाती है। स्फटिक की माला पर किसी भी मंत्र का जाप करने से वह मंत्र बहुत ही जल्दी सिद्ध हो जाता है। इस माला पर माँ लक्ष्मी, दुर्गा तथा गायत्री माता का जाप करने से एकदम सिद्धी की प्राप्ति होती है।

## एंकाक्षी नारियल

प्राय: सभी नारियलों का उपर का छिलका जटा उतारने पर इनमें तीन बिन्दु दिखाई देते हैं यह नारियल की आंखे कहलाती हैं। यह साधारण नारियल है। परन्तु यदा कदा इन्हीं में से किसी नारियल पर केवल एक ही आंख वाला नारियल मिल जाता है। यही वह दुर्लभ नारियल है। इसे तंत्र में एंकाक्षी नारियल के नाम से जाना जाता है। यह नारियल पवित्र, मंगलमय, धनसम्पत्ति दायक होता हैं इस एंकाक्षी-नारियल को घर लाकर घर में किसी पवित्र स्थान पर लाल वस्त्र के आसान पर प्रतिष्ठित कर दें। इसे साक्षात लक्ष्मी-विष्णु का मानकर पूजा करें।

उपरोक्त भाग्यवृद्धि में सहायक दुर्लभ वस्तुओं के अतिरिक्त अन्य वस्तुयें जैसे काले घोड़े की नाल, काली हल्दी, सियार सिगी, हत्था जौड़ी आदि भी इसी श्रेणी में आती हैं। इसके अतिरिक्त रत्नों के महात्मय का तो कहना ही क्या

# रत्न और ज्योतिष

रत्न और ज्योतिष का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि से प्रत्येक ग्रह का एक प्रतिनिधि रत्न निर्धारित किया गया है। जो मनुष्य के जीवन में उस ग्रह विशेष के दुष्प्रभावों का निवारण करता है रत्न एवं उपरत्नों का मनुष्य के जीवन पर निश्चित रूप से प्रभाव पड़ता है इस विषय में भारतीय और पाश्चात्य दोनों ही विद्वान एकमत हैं कि रत्न व उपरत्न ग्रहों के दुष्प्रभाव को दूर करके उन्हें बल देने में समर्थ हैं। रत्नों द्वारा दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदला जा सकता है। सभी प्रकार की उन्नति के लिये रत्न धारण करना अत्यंत श्रेयस्कर माना गया है। रत्न हमें शुभ-अशुभ कार्य होने का पूर्वानुमान भी कराते हैं ये रत्न जाति-धर्म, संप्रदाय से हटकर सभी मानवों को अपनी तरफ आकर्षित करते हैं।

## पन्ना (Emerald)

पन्ना बुध ग्रह का प्रतिनिधि रत्न शिक्षा एवं व्यवसाय में सफलता दिलाता है पाप नाशक है और संकट से बचाता है। साथ ही दमा, शोथ वाणी दोष आदि व्याधियों को नष्ट करके शरीर में बल एवं वीर्य की वृद्धि करता है पन्ना धारण करने से बुद्ध जनित समस्त दोष नष्ट हो जाती हैं यह शरीर को स्वस्थ और मन को प्रसन्नता रखता हैं कमीशन सम्बन्धी कार्यों से जुड़े व्यक्ति अवश्य धारण करें। मिथुन राशि व कन्या राशि के लिये विशेष अनुकूल होता है सीधे हाथ की कनिष्ठा में या गले में धारण करें।

इस रत्न में अनोखी विकिरण शक्ति विधिमान है।

**नोट :-** पन्ना में जाला होना आवश्यक है जाला रहित पन्ना नहीं होता जाला और रूखापन पन्ने में न हो तो वह पन्ना नहीं होता नकली पन्ना बनाने में भी पन्ने में जाला डालने की कोशिश की है परन्तु खान से निकले और बनाये हुए में बहुत अन्तर होता है। जिसे पारखी ही समझ सकता है।

पन्ना की प्रभाव अवधि:

पन्ना धारण तिथि से 40 दिन में प्रभाव देना आरम्भ कर देता है तथा 3 वर्ष तक पूर्ण प्रभाव देता है, फिर निष्क्रिय हो जाता है।

धारण विधि : पन्ने की अंगूठी सोने, चांदी या प्लेटिनम में बनवाकर दाएं हाथ की कनिष्ठा उँगली में धारण करनी चाहिए। बुधवार के दिन प्रात: नित्य कर्म आदि से निवृत्त होकर कच्चे दूध और गंगाजल में अंगूठी को धोकर निम्नलिखित मंत्र के उच्चारण के साथ धारण करना चाहिये-

"ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं स: बुधाय नम:"

**नोट :** जो व्यक्ति पन्ना धारण करने में असमर्थ हों वे उसके उपरत्न फिरोजा, मरगज, हरा ओनेक्स अथवा हरा हकीक धारण कर सकते हैं। इन्हें भी पन्ने की भांति धारण किया जाता है। ये उपरत्न भी बुध ग्रह जनित दोषों को शान्त कर मिथुन, व कन्या राशि वालों को लाभ प्रदान करते हैं।

मूल्य 300 रूपये से 4000 रूपये रत्ती तक क्वालिटी अनुसार हमारे यहां उपलब्ध है।

## ओपल

यह रत्न शुक्र का प्रतिनिधित्व करता है ओपल का मुख्य कार्य सामने वाले को आकर्षित करना भी है। अत: जिन लोगों के मित्रों की संख्या कम है व उदासीन रहते हैं उन्हें इसे अवश्य धारण करना चाहिये। खोये हुए प्यार को पाने में मदद करता है। उत्साह प्रदान करता है ऐश्वर्य प्रदाता है। नेतृत्व क्षमता में वृद्धि करता है। इसे तुला और वृष राशि वाले व्यक्ति या जन्म पत्रिका में शुक्र की स्थिति देखकर धारण करना चाहिये। चांदी में धारण करना शुभ रहता है।

ओपल **life** को **luxury** से भर देने में मदद करता है यह रत्न ग्लैमर मॉडलिंग, आकर्षण, प्रेम, सौन्दर्य, रोमांस सिनेमा ललित कला, फैशन उद्योग का प्रतिनिधित्व करता है।

ये अपना प्रभाव 40 दिन से दिखाना शुरू करता है और **3½** साल तक पूर्ण प्रभाव रखता है। मूल्य 400 रूपये से 2000 रूपये रत्ती क्वालिटी अनुसार हमारे यहां उपलब्ध है।

## माणिक (Ruby)

माणिक सूर्य का प्रतिनिधि रत्न होता है। इसके विभिन्न नाम हैं जैसे माणिक, माणिक्य, रविरत्न, माणिभ्यम्, पद्मराग तथा चुन्नी आदि। माणिक प्राय: लाख के रंग के समान रंग वाला होता है। लेकिन माणिक कमल व गुलाब रंग का भी होता है। यह पारदर्शी व अपारदर्शी दोनों तरह का होता है।

माणिक सूर्य ग्रह के प्रभाव को बल देता है। सरकारी नौकरी में आने वाली बाधाओं को दूर करता है उच्चशिक्षा प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करता है। धारक की यश व कीर्ति को बढ़ाता है हृदय की दुर्बलता को दूर करता है पिता का सुख प्रदाता है। नेत्र रोग में लाभ पहुंचाता है।

माणिक धारण तिथि से 12 दिन में प्रभाव देना प्रारम्भ कर देता है तथा 4 वर्ष तक

पूर्ण प्रभाव देता है। इसलिये यदि आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी है तो इस समय के बाद आप माणिक्य बदल लें।

इसे सोने, ताबें अष्ट धातु में धारण करना चाहता है। सिंह राशि वाले जन्म पत्रिका न होने पर भी इसे धारण कर सकते हैं।

**धारण विधि :** माणिक की अँगूठी सोने या अष्टधातु में बनवाकर रविवार के दिन कच्चे दूध और गंगाजल में धोकर अनामिका उँगली में धारण करनी चाहिए। माणिक की अँगूठी निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए धारण करनी चाहिए–

**''ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः''**

मूल्य 150 रूपये से 1200 रूपये रत्ती क्वालिटी अनुसार हमारे यहां उपलब्ध है।

## मोती (Pearl)

मोती चन्द्रमा का रत्न है चन्द्रमा ग्रह का द्योतक रत्न मुक्ता समुद्र के अन्दर तलहटी में सीप के अन्दर निर्मित जलीय रत्न है। मोती धारण करने से मन में शान्ति आती है। उदासीनता दूर होती है। एकाग्रता बढ़ती है कल्पनाशील भावुक व्यक्तियों के लिये अधिक गुणकारी है। चांदी में कनिष्ठा उंगुली में मोती धारण करने की तिथि से 4 दिन में प्रभाव देना प्रारम्भ कर देता है तथा 2 वर्ष 1 माह व 27 दिन तक पूर्ण प्रभाव देता है फिर निष्क्रिय हो जाता है।

धारण विधि: मोती चाँदी की अँगूठी में जड़वाकर धारण करना चाहिए। कम से कम 8 रत्ती का धारण करना। सोमवार के दिन प्रात: काल नित्यकर्म आदि से निवृत्त होकर मोती की अँगूठी को कच्चे दूध और गंगाजल से धोकर निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करते हुए दाँए हाथ की कनिष्ठा उँगली में धारण करना चाहिए। चन्द्रमा का मंत्र निम्नलिखित है –

**''ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः।''**

ये रत्न भी कर्क राशि वालों के लिए लाभकारी हैं तथा ये सभी चन्द्रमा के अनिष्ठ प्रभाव से बचाते हैं। इन्हें भी मोती की भाँति धारण किया जा सकता है। मूल्य 30 रू. से 350 रू. रत्ती क्वालिटी अनुसार हमारे यहां उपलब्ध है।

## नीलम (Blue Sapphire)

नीलम शनि ग्रह का प्रतिनिधि रत्न माना गया है योगियों में योगी भोगियों में भोगी, विलासियों में महाविलासी तपेश्वरे में महातपेश्वरे, नंगे पैर चलने वाले को सोने के जूते पहनने को बाध्य करने वाला नीलम ही तो है। जन्म जन्मांतरों के पाप मिटाकर विधाता के लेख को इस प्रकार बाचे कि गुत्थिया भी परिपूर्णतामय वातावरण बना दें, इसी तुरन्त दान महाकल्याण का नाम नीलम है। छूने पर तपता हुआ योगी, वेश्या से रमण करता भोगी, सन्तकुमारों की तरह बाल ब्रह्मचारी और जगदीश्वर की तरह ऐश्वर्यदाता यह नीलम स्वयं में अद्‌भुदता लिये हुये रत्नों में महारत्न की उपाधि से सुशोभित है। यदि किसी व्यक्ति को तुरन्त शुभ या अशुभ परिणाम देखने हो तो नीलम ही एकमात्र रत्न है जो धारण करते ही कम से कम समय में यानि तुरन्त परिणाम देता है।

नीलम मकर व कुम्भ राशि का मुख्य रत्न है शनि की साढ़े साती में भी इसे धारण करना शुभ रहता है। ये धारण करने के 40 दिन से पूर्ण प्रभाव देना प्रारम्भ करता है। और 5 वर्ष तक पूर्ण प्रभाव देता है। फिर निष्क्रिय हो जाता है। यदि आपके लिये यह शुभ नहीं है तो आपको तुरन्त दुष्परिणाम से प्रभावित कर देगा कोई भी अनहोनी होना आपके साथ प्रारम्भ हो जायेगा।

धारण विधि : नीलम की अँगूठी सोने, चाँदी या लोहे में बनवाकर शनिवार के दिन प्रात: कर्म से निवृतत होकर अंगूठी को कच्चे दूध और गंगाजल से धोकर निम्नलिखित मंत्र के उच्चारण के साथ धारण करनी चाहिए। तथा अँगूठी इस प्रकार से बनवायें कि इसका निचला भाग अंगली से स्पर्श करता रहे।

**"ॐ प्रां प्रीं प्रौं स: शनैच्चराय नम:"**

मूल्य 1000 रूपये रत्ती से 25000 रूपये रत्ती तक

## पुखराज (Yellow Sapphire)

पुखराज बृहस्पति ग्रह का प्रतिनिधि रत्न माना गया है। यह मूल्यवान रत्नों की श्रेणी में आता है। पुखराज भारत में महानदी ब्रह्मपुत्र, हिमालय, विध्याचल, उड़ीसा तथा बंगाल के क्षेत्रों में प्राप्त होता है। विदेशों में यह वर्मा, श्रीलंका, ब्राजील, रूस, जापान, स्काटलैण्ड, आयरलैण्ड तथा मैक्सिकों आदि में प्राप्त होता है। इनमें श्री लंका से प्राप्त पुखराज उत्तम श्रेणी का माना जाता है। बृहस्पति का रत्न होने

के कारण इसे धारण करने से व्यवसाय तथा व्यवहार की वृद्धि होती है साथ ही अध्ययन तथा पढ़ाई-लिखाई के क्षेत्र में भी यह उन्नति का कारक माना गया है। यदि किसी कन्या की शादी में विलम्ब हो रहा है तो उसे पुखराज धारण करवाना श्रेष्ठ माना गया है ये सुख तथा संतोष को देने वाला एवं बल, वीर्य नेत्र ज्योति की वृद्धि करने वाला भी माना गया है। पुखराज धारण करने से बृहस्पति जनित सभी अनिष्ट दूर होते हैं।

**धारण विधि :** पुखराज की अँगूठी सोने या अष्टधातु में बनवाकर दाँए हाथ की तर्जनी उँगली में धारण करनी चाहिए। बृहस्पतिवार के दिन प्रात: कर्म से निवृत्त होकर अँगूठी को कच्चे दूध और गंगाजल से धोकर निम्नलिखित मंत्र के उच्चारण के साथ धारण करनी चाहिए-

**''ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं स: गुरवे नम:।''**

मूल्य 1000 रू. रत्ती से 25000 रूपये रत्ती तक

## गोमेद Zircon (राहु रत्न)

गोमेद को राहु ग्रह का प्रतिनिधि रत्न माना जाता है। इसे विभिन्न नामों से पुकारा जाता है। जैसे गोमेद, राहुरत्न, गोमेदक तथा अंग्रेजी में इसे जिरकान कहते हैं। गोमेद धारण करेन से राहु के अनिष्ट प्रभाव शान्त होते हैं चिकित्सा की दृष्टि से वायुगोला तथा समस्त प्रकार के उदर रोगों में इसे लाभदायक माना गया है। गोमेद को कोर्ट कचहरी मुकदमें के विषय में भी लाभदायक माना गया है जिन व्यक्तियों के मन में भ्रम की स्थिति रहती है उन्हें अवश्य धारण करना चाहिये। भारत में गोमेद कश्मीर, शिमला, बिहार, उड़ीसा से प्राप्त होता है। विदेशों में यह वर्मा श्रीलंका तथा थाईलैण्ड से प्राप्त होता है।

गोमेद धारण तिथि से 40 दिन में पूर्ण प्रभाव देना प्रारम्भ करता है तथा 6 वर्ष तक प्रभाव देता है फिर निष्क्रिय हो जाता है।

**धारण विधि :** गोमेद की अँगूठी चाँदी या ताम्बें में बनवाकर दाएँ हाथ की अनामिका उँगली में धारण करनी चाहिए। रविवार के दिन प्रात: कर्म से निवृत्त होकर अँगूठी को कच्चे दूध और गंगाजल से धोकर निम्नलिखित मंत्र के उच्चारण के साथ धारण करनी चाहिए-

**''ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं स: राहुवे नम:।''**

मूल्य 50 रू. रत्ती से 350 रू. रत्ती तक

# लहसुनिया (केतु रत्न)

लहसुनिया को केतु ग्रह का रत्न माना जाता है यह वायुगोला तथा पित्तज रोगी का नराशक सरकारी कार्यों में सफलता दिलाने वाला तथा दुर्घटना आदि से बचाने वाला होता है। लहसुनिया चीन, वर्मा, ब्राजील एवं श्रीलंका में प्राप्त होता है। भारत में ये उड़ीसा में पाया जाता है। लहसुनिया धारण करने से भूत बाधा एवं नेत्र रोग नष्ट होते हैं ये चांदी में अनामिका में धारण करना श्रेष्ठ रहता है। धारण करने के 40वें दिन से लेकर 7 वर्ष तक पूर्ण प्रभाव देता है फिर निष्क्रिय हो जाता है।

**धारण विधि :** लहसुनिया की अँगूठी सोने या चाँदी में बनवाकर सोमवार के दिन कच्चे दूध व गंगाजल में धोकर अनामिका उँगली में निम्नलिखित मंत्र के उच्चारण के साथ धारण करनी चाहिये।

**''ॐ स्रां स्रीं सौं. स: केतवे नम:''**

मूल्य 50 रू. रत्ती से 150 रू. रत्ती तक

## फिरोजा

नीले और हलके हरे रंग का सेमी प्रिशियस स्टोन होता है यह ऊपरी हवा और नजर से बचाता है प्रेमी प्रेमिका में यदि अनबन चल रही हो तो 2 अंगूठी बनवाकर दोनों एक दूसरे को भेट करें तो उनमें मतभेद दूर होते है।

## दानाफिरंग (Kidney Stone)

यह हरे रंग का **Semipresious Stone** होता है जैसे कि इसके नाम से स्पष्ट

## पेरिडाट

यह भी बुद्ध ग्रह के लिये ही पहना जाता है इसे लव स्टोन भी कहा जाता है यह जीवन को खुशनुमा रखता है और रिश्तों में मजबूती देता है, अस्थमा तनाव में भी लाभकारी है।

# सामान्य प्रश्नोत्तरी

प्र. : रत्न क्या है ?

उ. : रत्न खनिज हैं। यह वनस्पति तथा जैविक साधनों से भी उपलब्ध हो सकते हैं। यह सुन्दर तथा आकर्षण का गुण रखते हैं।

प्र. : इनका उपयोग कहाँ होता है ?

उ. : सुन्दरता के गुण के कारण यह अलंकरण में प्रयोग किये जाते हैं। कठोरता के गुण के कारण इनका मशीनी उपकरण में प्रयोग होता है। जीवन को प्रभावित करने के गुण के कारण एक बड़ा वर्ग इन्हें भाग्यशाली रत्नों के रूप में भी स्वीकारता है।

प्र. : जीवन का प्रभावित करना अर्थात ?

उ. : दुर्भाग्य को दूर करके सौभाग्य देना।

प्र. : वह कैसे ?

उ. : रंग सिद्धान्त एवं ब्रह्माण्डीय ऊर्जा से। जीवात्मा में न्यून हो रहे रंग तथा ऊर्जा में ब्रह्माण्ड से यह शोषित करके शरीर में समाहित करते है तद्नुसार रंग और ऊर्जा में सामन्जस्य बन जाता है।

प्र. : सरल भाषा में समझाएँ कि रत्न कार्य कैसे करते हैं ?

उ. : रत्न शरीर में हुई किसी रंग विशेष की क्षति की को पूर्ण करते हैं। इसे एक उदाहरण से समझें। माना आप अपने सामने एक लैम्प रखकर कोई पुस्तक पढ़ रहे हैं। लैंप के उचित स्थान पर न होने के कारण उसका प्रकाश ठीक से पुस्तक पर नहीं पड़ेगा। फलस्वरूप आपको पढ़ने में कठिनाई आयेगी। पुस्तक तथा आप माना स्थिर अवस्था में हैं। परन्तु लैम्प को सुविधानुसार प्रकाश पाने के लिए किसी भी दशा में घुमाया जा सकता है। जैसे-जैसे लैम्प पुस्तक के पीछे खिसकाया जायेगा। आपको पढ़ने में सुखद अनुभूति होगी। रत्न भी ठीक ऐसे ही प्रिज्म अथवा लैंस की तरह कार्य करते हैं। यह ब्रह्माण्डीय स्त्रोतों से वांछित रश्मियां एकत्र करके शरीर में प्रविष्ट करवाते हैं जिससे कि हमें सुखद अनुभूति होती है।

प्र. : रत्न के पीछे रत्नों के औने-पौने, सवा-सवाएं आदि भार का क्या औचित्य है ?

उ. : कोई नहीं, यह अपरिपक्व मानसिकता की देन है। भगवान के प्रसाद की तरह रत्नों में भी सवा, डेढ़, औने-पौने भार का प्रचलित हो गया। व्यवसायी निर्बुद्धि वर्ग भी रत्न बताते समय डरा देते हैं। ''यदि सवा सात रत्ती का रत्न नहीं होगा तो अनर्थ हो जायेगा।'' रत्न विक्रेता भी वांछित भार का रत्न पैदा कर देते हैं। भले ही वास्तविक तौल में उसका भार कुछ और निकले।

प्र. : नकली रत्नों का चलन कब से है ?

उ. : 17वीं सदी में नकली कांच पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। इसका आकार-प्रकार ठीक हीरे जैसा बना दिया था। इसका अर्थ है कि कम से कम चार सौ वर्ष पूर्व तो इनका चलन हो ही गया था। उन्नसवीं सदी के पूर्वार्द्ध से लेकर मध्य तक नकली रत्नों का देश-विदेश में व्यापार धड़ल्ले से होता था।

प्र. : बसरे के मोती नाम से जो बिकता है क्या वह ठीक है ?

उ. : नहीं। समुद्र में इतना क्रूड आयल गिरता है कि बसरा नामक क्षेत्र के समुद्र का सारा पानी दूषित हो गया। परिणामस्वरूप दसों वर्षों से वहां की प्राकृतिक मोती बनाने वाली सीप ही समाप्त हो गयी हैं। बस बसरे का मोती कहाँ से आ रहा है, स्वयं सोचिये ?

प्र. : रत्नों के विषय में जो पौराणिक किंवदन्तियाँ पढ़ने-सुनने में मिलती हैं-क्या उनमें सत्यता है ?

उ. : पुराण हैं, पौराणिक कथाएँ भी हैं। उनमें सार-सत भी हैं परन्तु अधिकांशतः किंवदन्तियाँ ही बना दी गयी हैं। उत्थान के लिए हमें वर्तमान परिवेश में जीना है, पौराणिक युग में तथाकथित् अतिश्योक्ति वाली दंत कथाओं और किंवदन्तियों में नहीं।

प्र. : रत्न विज्ञान के निदान वाले पहलू पर आपका व्यक्तिगत दृष्टिकोण क्या है ?

उ. : रत्न विज्ञान से एक सीमा तक निदान-लाभ सम्भव है। परन्तु उसका कोई एक नियम सब पर फिट बैठे, यह आवश्यक नहीं है।

आप अलग-अलग स्थान के तीन ऐसे रोगी हैं जो बिल्कुल एक से मिलते-जुलते किसी गम्भीर रोग से पीड़ित हैं एक योग्य डॉक्टर तीनों को बिल्कुल एक सी दवाई देता है। यहां पर यह आवश्यक नहीं हैं कि तीनों रोगी एक ही दवाई से रोगमुक्त हो जाएँ। एक ठीक हो सकता है, दूसरे को उसी दवा का विपरीत प्रभाव हो जाता है तथा तीसरे पर कोई प्रभाव ही नहीं होता। योग्य डाक्टर स्थान, समय, मनोवृत्ति, रोगी आदि को देखकर निश्चय ही अलग-अलग दवा देगा। अनेक पहलू टटोल कर फिर निदान वाले क्षेत्र में जायेंगे तो वांछित फल की अधिक सम्भावना होगी।

प्र. : रत्नों की माला बनाते समय उनमें धागा पिरोने के लिए छेद कर दिये जाते हैं। क्या ऐसे रत्नों की अंगूठी भी बनवाई जा सकती हैं ?

उ. : नहीं। रत्न एक प्रकार से खण्डित हो गया और खण्डित रत्न अपेक्षाकृत अपनी ग्राह्यशक्ति खो देता है।

प्र. : रत्नों का चलन क्या वैदिक काल में था ?

उ. : ऋग्वेद के अनेक मंत्रों में रत्न शब्द का प्रयोग मिलता है। परन्तु वस्तुतः यह रत्न बोधन प्रचलित रत्न न होकर वनस्पतियों की जातियाँ थी। अर्थर्ववेद में मणियों का अवश्य वर्णन आता है। रामायण, बाईबिल, महाभारत आदि ग्रंथों में रत्नों का वर्णन खूब आता है। हां रत्नों के नाम वहां भिन्न अवश्य हैं।

प्र. : रत्नों की वनस्पतिक जाति से क्या तात्पर्य है ?

उ. : वनस्पतिक अर्थात् हाथाजोड़ी, कुशा ग्रंथि, श्वेतार्क, नागकेसर, रूद्राक्ष, एकाक्षी नारियल, तुलसी-मंजरी आदि।

प्र. : रत्नों की अंगूठी के स्थान पर यदि उनकी माला धारण की जाए तो क्या अधिक प्रभावशाली सिद्ध होगी।

उ. : नहीं। रत्न यदि अच्छी गुणवत्ता वाला है और व्यक्ति विशेष के लिए ठीक-ठाक गणना किया गया है तो उसका सामान्य भार भी प्रभावशाली सिद्ध होगा। ऐसा नहीं कि रत्न का बड़ा सा पत्थर गले में बाँध लिया जाये तो वह प्रभाव दिखायेगा। एक चम्मच घी से जो आपूर्ति होगी वह एक गिलास घी पीकर नहीं। एक गिलास घी पीकर पता नहीं क्या होगा ? स्वयं मनन करें।

प्र. : कुछ विद्वान उन ग्रहों के रत्न चुनते हैं जो जन्मपत्री में बलहीन हों ?

उ. : हाँ कुछ स्कूल ऐसे हैं जो नीच के ग्रहों के रत्न धारण करवाते हैं। यह भी उचित है परन्तु यह चयन उस स्थिति में अधिक उपयोगी सिद्ध हुआ है जहां रत्न रोग निदान के लिये प्रयोग किये जा रहे हों।

प्र. : रत्नों को प्रयोग करने से पहले उन्हें सिरहाने रखकर सोने जैसी आदि बातें प्रचलन में हैं, यह कहाँ तक सत्य हैं ?

उ. : उपर्युक्त चुना हुआ रत्न नियमानुसार जब शरीर के सम्पर्क में आयेगा तब ही प्रभावी सिद्ध होगा। इस प्रकार रत्न यदि प्रभाव दिखाने लगता तो सबसे पहले वह रत्न विक्रेता को, जिसके बैग में रत्न भरे होते हैं, फल देता। हां कुछ प्रभावशाली, महत्वपूर्ण तथा दुर्लभ रत्न ऐसे भी हो सकते हैं जिनका प्रभाव घर में प्रवेश के बाद में ही हो सकता है। ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं। परन्तु ऐसे रत्न सर्वसाधारण की पहुंच से बहुत देर हैं, इसलिये उन्हें भूल जाइए।

प्र. : क्या चुम्बक भी रत्नों की प्रभाव सिद्ध होता है ?

उ. : हाँ, इसका प्रयोग रक्तचाप को सन्तुलन में लाने के लिये व्यापक स्तर पर किया जाता है।

प्र. : रत्न के लिए धातु तथा उंगली का भी वर्णन करें।

उ. : यदि धातु तथा उस उंगली की समुचित व्यवस्था कर ली जाए जिसमें कि रत्न धारण करना है तो परिणाम-त्वरित होगा।

| **रत्न** | **किस ग्रह का रत्न** | **कौन सी धातु** | **कौन सी ऊंगली** |
|---|---|---|---|
| माणिकय | सूर्य | स्वर्ण, तांबा | अनामिका |
| मोती | चन्द्र | चाँदी | कनिष्ठिका |
| मूंगा | मंगल | स्वर्ण, तांबा, चांदी | अनामिका |
| पन्ना | बुध | चांदी, पारा, स्वर्ण, कांसा | कनिष्ठिका |
| पुखराज | गुरू | स्वर्ण, अष्टधातु | तर्जनी |
| ओपल | शुक्र | चांदी, अष्टधातु | तर्जनी |
| नीलम | शनि | चांदी रांगा, त्रिधातु, लोहा | मध्यमा |

त्रिधातु हैं-सोना, चांदी और लोहा। अष्ट धातुएँ हैं-सोना, चांदी, लोहा, तांबा, जस्ता, रांगा, सीसा तथा पारा।

प्र. : जहां दो से अधिक रत्न-उपरत्न धारण करने की बात है तब उनका जड़वाने को क्रम क्या होना चाहिए ?

उ. : सर्वाधिक प्रभावी उँगली ऐसे में अनामिका सिद्ध होगी। माना इसमें आप माणिक्य, पन्ना तथा पुखराज एक साथ ही एक ही अंगूठी में जड़वाकर धारण करना चाहते हैं। तो मध्य में माणिक्य, तर्जनी उंगली की तरफ पुखराज और कनिष्ठिका उंगली की तरफ पन्ना रखें।

सामान्यत: माणिक्य से तर्जनी उंगली की तरफ क्रमश: नीलम के रत्न-उपरत्न तथा कनिष्ठिका उंगली की तरफ क्रमश: बुध, चन्द्र तथा शुक्र के रत्न उपरत्न जड़वाएँ। यदि आप पैन्डेण्ट में यह जड़वा रहे हैं तो नरवरतन जड़वाने का क्रम चुनें। परन्तु यह सामान्य से नियम है। रत्न जड़वाने का क्रम व्यक्ति-व्यक्ति पर निर्भर कर सकता है। पुखराज, माणिक्य तथा पन्ना एक अधिकारी मित्र को मैंने उनकी तर्जनी उंगली में धारण करवाकर विलक्षण परिवर्तन देखा। यही संयोग पहले वह अनामिका उंगली में धारण किए हुए थे जहां वह पूर्णतया निष्प्रभावी सिद्ध हो रहा था।

प्र. : रत्न अंगूठी में जड़वायें कैसे जाएँ ?

उ. : रत्न ऐसे जड़वाये कि पीछे से उसका भाग शरीर के उस भाग पर स्पर्श अवश्य करे जहां वह धारण किया जा रहा है। रत्न के नीचे वाला भाग सदैव शरीर को स्पर्श करें। रत्न ऐसे चुनें जिसमें यह भाग रत्न के ठीक मध्य में उसके फोकस पर हो

ताकि रश्मियाँ यहाँ केन्द्रित हो कर शरीर में समाविष्ट हो सकें।

प्र. : यूनानी चिकित्सा पद्धति में रत्नों का क्या महत्व है ?

उ. : भारतीय चिकित्सा पद्धति में रत्नों की भस्म बनाकर रोग के निदान का कार्य किया जाता है। परन्तु यूनानी पद्धति में उन्हें पीसकर उनका चूरण तथा बुरादा बनाकर रोगोपचार में प्रयोग किया जाता है। वह मानते हैं कि भस्म बनाने से रत्न के भूलभूत गुण जलकर नष्ट हो जाते हैं।

प्र. : मणियाँ क्या है ?

उ. : मणियाँ वस्तुतः रत्न ही हैं। संस्कृत में दुर्लभ, मूल्यवान आदि रत्नों को मणि संज्ञक बना दिया गया है। यह रत्नों के नाम हैं। जैसे सूर्यकान्त मणि माणिक्य का ही नाम है। तमोमणि गोमेद, पुष्प अर्थात् पीतमणि पुखराज के नाम हैं।

प्र. : रत्न कितने प्रकार के होते हैं ?

उ. : अब तक के उपलब्ध आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि धरती को रत्नगर्भा कहा गया है 2500 से भी अधिक अकार्बनिक रसायन उपलब्ध है। परन्तु इतनी बड़ी संख्या में से मात्र 16 ने ही रत्नों की श्रेणी पायी है। तथाकथित 84 रत्न इनमें ही आते हैं। इन 84 रत्नों में से भी कुछ दुर्लभ अथवा काल्पनिक हैं। पता नहीं वह कभी अस्तित्व में आए भी अथवा नहीं, जैसे पारस मणि।

प्र. : अनेक रत्नों को हकीक का नाम दे दिया जाता है, क्या यह उचित है ?

उ. : अक़ीक़ वर्ग में बहुत से रत्न आते हैं, यह ठीक है। परन्तु ऐसा भी नहीं है कि जो रत्न हमारी समझ के बाहर हैं वह अक़ीक़ वर्ग के ही हैं। क्रिस्टल एक सामान्य सा नाम है। क्वार्ट्ज एक अन्य ऐसा ही नाम है। इनके अन्तर्गत अनेक रत्न आते हैं जैसे सुलेमानी, कैल्सीडोनी, कार्नीलियन, रॉक, क्रिस्टल, गुलाबी क्वार्ट्ज ऐमिथिस्टीय, क्वार्ट्ज, कैट्स आई क्वार्ट्ज, जैस्पर, ऐवेन्टुराइन क्वार्ट्ज आदि। सामान्य भाषा में यह अक़ीक वर्ग के ही हैं इसलिये विभिन्न नामों से भ्रम होना स्वाभामिक है।

प्र. : आम उपलब्ध साहित्य में रत्नों की शुद्धता की परख वाली बातें जो प्रकाशित होती रहती हैं, उनमें कहाँ तक सत्यता है ?

उ. : रत्नों की परख उनकी क्रिस्टलीय तथा रासायनिक संरचना और भौतिक गुणों के आधार पर की जाती हैं। वस्तुतः यही रत्न आँकने की कसौटी है। किसी खनिज रत्न आँकने की कसौटी है। किसी खनिज रत्न की विश्वसनीय परख इसके अतिरिक्त निर्भर करती है उसके आणुविक संघटन पर। इसके लिए आवश्यक होती है उपकरण से सुसज्जित प्रयोगशाला की। परन्तु ऐसे उपकरण सर्वसाधारण

को सुलभ नहीं है इसलिये रत्न की सत्यता पर भी प्रश्न चिन्ह लगना स्वाभाविक है। मोटे तौर पर भौतिक परख के रूप में निम्न बातें भी सत्यता की परख में उपयोगी सिद्ध होती हैं–

प्रकाश–आधारित गुण तथा रंग, द्युति, स्फुरदीप्ति, प्रतिदीप्ति आदि। स्वाद, गंध, स्पर्श–आधारित गुण। सम्युचयन–आधारित गुण, आकृति, बहुरूपता कठोरता, विदलन आदि। आपेक्षित घनत्व चुम्बकत्व तथा अन्य गुण।

इसलिये बेसिर–पैर की तथा कथित बातों जैसे कि माणिक्य को दूध में डालने से वह उबलने लगता है, मूंगा जलाने से जलता नहीं लहसुनिया को मुट्ठी में कुछ समय के लिए बन्द रखा जाए तो वह अग्नि स्वरूप ज्वलंत होने लगता हे, रत्न के ठीक बराबर चावल साथ बांधकर सोने से यदि वह सच्चा है तो चावल का भार घटा देता है, आदि को बुद्धि विवेक से ही अपनाएँ। आजकल कुछ मदारी रत्नों को एक कटोरी में रखकर उछलता हुआ दिखाते हैं यह एक मदारी का खेल है और कुछ नहीं।

प्र. : कुछ विश्व प्रसिद्ध हीरों के नाम बताएं ?

उ. : कुछ प्रसिद्ध हीरे–जहांगीर शाह हीरा निजाम हीरा दरिया–ए–नूर ध्रुव हीरा नासिक हीरा कुनीनान हीरा ग्रेट मुगल हीरा, ओरलेक हीरा, पिट का रीजेंट हीरा, कोह–ए–नूर, होप, स्टार ऑफ इण्डिया तथा जोंकर आदि।

प्र. : क्या हीरे के ज़रकन के अतिरिक्त अन्य उपरत्न भी हैं ?

उ. : हीरे के कुछ अन्य उपरत्न हैं– सिम्मा हीरा, कंसला, हीरा, कुरंगी हीरा, तंकू हीरा तथा दत्तला हीरा आदि।

प्र. : कहते हैं कि हीरा चाटने से व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है ?

उ. : नहीं, यह सब बात ठीक नहीं है। हाँ यदि हीरे को निगल लिया जाए और समय रहते उपचार न करवाया जाए तो सम्भावना रहती है कि अपनी कठोरता कारण वह आंतों को काट दे और व्यक्ति की मृत्यु हो जाए।

प्र. : क्या रत्नों में रंग कृत्रिम रूप से भी भरे जाते हैं ?

उ. : हाँ, ताप द्वारा अथवा कुछ रासायनिक घोलविशेष द्वारा रत्नों को कृत्रिम रूप से भी रंगकर अधिक आकर्षक बनाया जाता है जिससे कि अलंकरण के रूप में उनकी आभा और भी निखर जाती है। परन्तु इस प्रकार के रंगे गए रत्न की आभा प्राकृतिक रूप से मिलने वाले रत्नों की तरह स्थाई नहीं होती है।

# ॐ नमः शिवाय्

## अपने नाम के अक्षर अनुसर राशि एवं रत्नों की जानकारी

| नामाक्षर | राशि | स्वामी | नक्षत्र रत्न |
|---|---|---|---|
| चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ | मेष | भौम | मूंगा |
| इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे वो, | वृष | शुक्र | ओपल |
| क, की, कु, घ, ड़, छ, के, को, क्ष, ह | मिथुन | बुध | पन्ना |
| हि, हु, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो | कर्क | चन्द्र | मोती |
| मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे | सिंह | सूर्य | माणिक |
| टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो | कन्या | बुध | पन्ना |
| रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते | तुला | शुक्र | ओपल |
| तो, ना, नी, नू, ने नो, या, यी, यू | वृश्चिक | भौम | मूंगा |
| ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे | धनु | बृहस्पति | पुखराज |
| भो, ज, जी, जू, जे, जो, खा, खी, | | | |
| खू, खे, खो, गा, गी, ज्ञ | मकर | शनि | नीलम |
| गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा | कुम्भ | शनि | नीलम |
| दी, दू, थू, ढ, ञ, दे, दो, चा, ची | मीन | बृहस्पति | पुखराज |

# रोगोपचार हेतु रत्न

रोगोपचार हेतु रत्न विज्ञान क्षेत्र में एक क्रान्तिकारी अनुसंधान कार्य हो रहा है। पाश्चातय देशों में इनका व्यापक चलन है। अपने प्रयोगों में भी स्वयं शोधकृत अनेक युग्मों पर बल मिला है। अँगूठी अथवा पैण्डेन में दो या दो से अधिक रत्न जड़वाने हों तो वह ऐसे लगवायें जाएँ कि उंगली अथवा सीने पर अच्छी तरह से स्पर्श करते रहें। यह सदैव ध्यान रखें कि रोगोपचार हेतु सर्वाधिक वांछित प्रभाव उस स्थिति में हो सकता है कि जब प्रथम श्रेणी के रत्न चुने गये हों। अन्यथा उपरत्न तो एक विकल्प है ही। आरोग्य की अवस्था प्राप्त करने के लिए आयुर्वेद पद्धति में किस रत्न अथवा उनके संयोग प्रयोग करने से कौन-कौन सी शारीरिक व्याधियों में राहत मिल सकती है अथवा रोग का पूर्णतया शमन हो सकता है इसका विवरण यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ। अपने-अपने बुद्धि विवेक से रत्न चयन की यह विधा भी अवश्य अपनाएँ-

| रत्न/उपरत्न अथवा उनके युग्म | किस रोग में लाभकारी देंगे |
|---|---|
| पन्ना + पुखराज अथवा चन्द्रकान्त + गोमेद | अम्ल तथा पित्त (Acidity) |
| लाल मूंगा + मोती अथवा फीरोज़ा + पीला पुखराज | दुर्घटना से रक्षा के लिये |
| पुखराज + नीलम तथा चन्द्रकांतमणि + पन्ना | एलर्जी (Allergy) |
| लाल मूंगा + पीला पुखराज | रक्त की कमी, हार्निया |
| लाल मूंगा + पन्ना | मानस रोग (Neuralgia) |
| | स्मृतिनाश (Amnesia) |
| लाल मूंगा + पीला पुखराज अथवा | मूर्छा (Apoplexy) |
| पन्ना चन्द्रकांत | हार्निया, गठिया, मूत्र सम्बन्धी, |
| लाल अक़ीक + लाल मूंगा | श्वाँस रोग |
| पन्ना + चन्द्रकांत मणि + पुखराज | सूखा रोग निर्बलता |
| नीलम + पन्ना अथवा पुखराज + माणिक्य | बालों के रोग, गंजापन लीवर |
| माणिक + मोती अथवा मूंगा + चन्द्रकान्त | अन्धत्व |
| चन्द्रकान्त मणि | फोड़े-फुंसी, आंख का रोग |
| पन्ना + पुखराज + लाल मूंगा | ब्रेन ट्यूमर (Brain Tumer) |
| हल्ला नीलम + लाल मूंगा | कैंसर |
| पन्ना + मोती अथवा पन्ना + मोती + माणिक्य/मूंगा | मोतियाबिन्द (Cataract) |
| लाल मूंगा + मोती | अर्श (Piles) |
| | रंगहीनता (Colour Blindness) |

| | |
|---|---|
| सफेद मूंगा + लाजवर्त अथवा ओपल + मोती | चर्मरोग (Dermatitis), खाज–खुजली |
| सफेद मूंगा + सफेद पुखराज | मधुमेह (Diabetes) अतिसार (Diarrhea) |
| पन्ना + पुखराज अथवा गोमेद | पाचनतंत्र (Digestive Disorder) |
| सफेद मूंगा + लाल मूंगा | कष्टार्तव (Dysmenorrhoea) |
| चन्द्रकांत मणि + नीलम | लाल चकते (Carbuncle) |
| लाल मूंगा + पन्ना | कान के रोग, पित्ताश्मरी |
| पन्ना + चन्द्रकात मणि | मिर्गी (Epilepsy), सिरदर्द |
| लाल मूंगा + चन्द्रकांत मणि | नासूर, भगन्दर, मलेरिया, मिर्गी, जलोदर, प्रमेह, सूजाक |
| बड़े से बड़ा मोती | सर्दी, उत्साहहीनता (Frigidity) |
| सफेद मूंगा + चन्द्रकांत | गलगण्ड (Goitre) |
| लाल मूंगा + माणिक्य | अतिगलन (Gangrene) |
| पन्ना + पुखराज + चन्द्रकांत + माणिक्य अथवा | टाइफाइड (Typhoid) |
| पन्ना + पुखराज + नीलम अथवा लाल मूंगा + मोती | नपुंसकता (Imotency) |
| ओपल + लाल मूंगा अथवा हीरा + पुखराज (पीला अथवा सफेद) | अनिन्द्रा (Insomnia), एकाग्रता का अभाव |
| लाल मूंगा + नीलम | पाण्डुरोग या पीलिया (Jaudice) |
| गोमेद + लाल मूंगा | कोढ़ (Leprosy) |
| हीरा + मोती + फिरोजा | श्वेत कुष्ठ |
| सफेद मूंगा + पन्ना | श्वित्र रोग |
| माणिक्य + पैरिडौट | प्रेतबाधा |
| पन्ना + पुखराज + चन्द्रकांत अथवा गोमेद + लहसुनिया | वमन |
| लाल मूंगा + चन्द्रकांत अथवा मोती | मस्तिष्क विकास के कारण असन्तुलित शरीर |
| गोमेद + पन्ना | स्वर अथवा वाणीदोष |
| मोती + माणिक्य + पन्ना + लाला मूंगा | स्मृतिदोष |
| मोती + लाल मूंगा + चन्द्रकांत अथवा लाल मूंगा + मोती | अर्श (Piles) |

| | |
|---|---|
| नीलम + गोमेद अथवा माणिक्य + लाल मूंगा अथवा | कमर का दर्द ( Backache ) |
| लाल मूंगा + पीला पुखराज | |
| माणिक्य + लाल मूंगा अथवा | शीत दंश ( Frostbite ) |
| | मुँहासे ( Pimple ) |
| सफेद + लाजवर्त अथवा सफेद मूंगा | |
| माणिक्य + मूंगा | शीत ज्वर |
| माणिक्य + मोती + पन्ना | सिरदर्द ( Headache ) |
| गोमेद + चन्द्रकांत अथवा पुखराज + मोती अथवा | दाँतों के अनेक रोग |
| मूंगा + पुखराज | |
| पुखराज + मूंगा + मोती | दुर्घटना से बचाव का रक्षा कवच |
| पुखराज + चन्द्रकांत | लू लगना ( Sun Stroke ) |
| हीरा + मोती + पुखराज | हार्निया ( Hernia ) |
| गोमेद + पुखराज | गठिया ( Gout ) |
| लाल मूंगा + चन्द्रकांत | मलेरिया ( Malaria ) |
| | अथवा विषम ज्वर |
| स्फटिक + गोमेद अथवा गोमेद + लाजवर्त | गुल्म ( Peptic Alcer ) |
| जिरकॉन + चन्द्रकांत : फिरोजा अथवा पुखराज + नीलम | एड्स ( Aids ) |
| पीला पुखराज + लाल मूंगा | कब्ज ( Constipation ) |
| | पित्त ( Bile ) |
| लाल मूंगा + पुखराज | यक्षमा ( Tuberculosis ) |
| लाल मूंगा + सफेद पुखराज | फिरंग रोग ( Suyphilis ) |
| लाल मूंगा + पीला पुखराज | फुफ्फुस ज्वर ( Pheumonia ) |
| लाल मूंगा + पन्ना | पक्षाघात ( Paralysis ) |
| | मानस रोग ( Neuralgia ) |
| लाल मूंगा + पन्ना | गर्भपात ( Miscarriage ) |
| पन्ना + मोती + पीला पुखराज | मनोराग ( Mental illness ) |
| लाल मूंगा + चन्द्रकांत | जलोदर ( Hydrocele ) |

**Disclaimer :-** बीमारी दूर करने के लिये अपने डाक्टर से दवा आदि नियमित लेते रहें इन रत्नों का प्रभाव जैसे दवा के साथ प्रात: Monrning Walk करने जैसे रहता है ये Support में अच्छा काम करते है।

# रत्न हमारे संस्थान से ही क्यों ??? (Why us?)

आज रत्न अधिकांश ज्वैलर बाजार में बेचते है ऑनलाईन भी सुलभ है फिर हम से क्यों ले इसका पहला कारण तो ये है बाजार में विक्रेता के लिये ये उसका माल है तो वह अपनी दैनिक पूजा तो करेगा लेकिन इन रत्नों को रोज कैसे रखाा जाता है इनकी क्या पूजा करी जाती है उसे ज्ञान नहीं है हम इनकों जब तक भी अपने पास रखते है इनमें दिव्यता बनी रहे इसके लिये इसकी नियमित पूजा आदि करते है और एक पौधे (नर्सरी में रखे) की भांति खाद्य पानी भी देते है इसके अलावा सारे रत्न हम पक्की रत्ती में ही देते है और असली तो देते ही है महंगे रत्न लेब सर्टिफिकेट के साथ ही देते है।

*अन्त में यही कहना चाहूंगा आप रत्न पहने या न पहने यह आपकी मर्जी पर निर्भर करता है*
*पर जब भी पहने पूर्ण विश्वास और आस्था के साथ पहने रत्न का विज्ञान*
*तो अपना काम करता ही है पर जब आस्था विश्वास साथ जुड़ जाता है*
*तो यह चमत्कारी प्रभाव पैदा करता है, 'विश्वासं फलदायकं'*

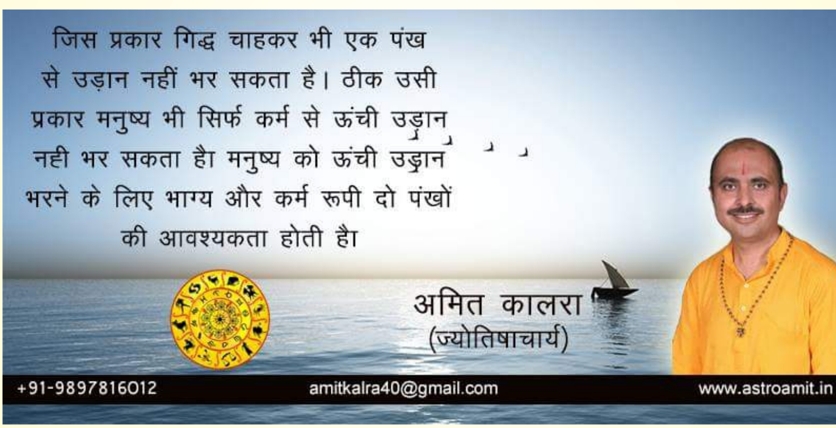

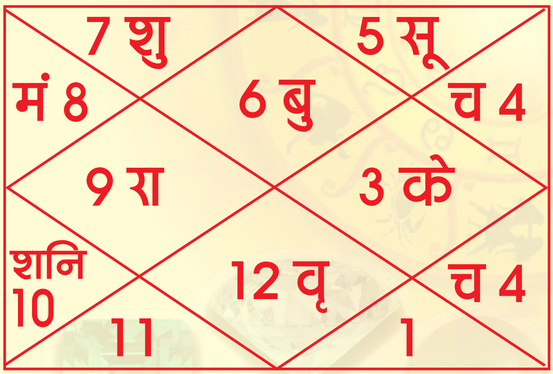


## Contact me :

- Is the Gemstone you are wearing correct according to your horoscope or astrological.
- Things are not going to according to you.
- To make 100% correct & detailed Janampatri.
- Problems in Business, Job, Study etc.
- I will analyze your horoscope and tell you the astrological reasons of your set backs and unstatisfaction in your career, business etc. with the ways to get rid of by this divine science - Vadic Astrology.

## नक्षत्र ज्योतिष एवं रत्न केन्द्र

लेखक व सम्पादक : अमित कालरा, ज्योतिषाचार्य
सी-10, राजेन्द्र नगर, नाथ नगरी बरेली मो. 9897816012
Web.: www.astroamit.in

# शिव ताण्डव स्तोत्रम्

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले
गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम् ।
डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं
चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ॥१॥

जटाकटाहसंभ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी
विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्धनि ।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ॥२॥

धराधरेन्द्रनंदिनीविलासबन्धुबन्धुर
स्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे ।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि
क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥३॥

लताभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभा
कदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे ।
मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे
मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि ॥४॥

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर
प्रसूनधूलिधोरणी विधूसराङ्घ्रिपीठभूः ।
भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटक
श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः ॥५॥

ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा
निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम् ।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं
महाकपालिसम्पदेशिरोजटालमस्तु नः ॥६॥

करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वल
द्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके ।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक
प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम ॥७॥

नवीनमेघमण्डली निरुद्धदुर्धरस्फुरत्
कुहूनिशीथिनीतमः प्रबन्धबद्धकन्धरः ।
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः
कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरंधरः ॥८॥

प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभा
वलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम् ।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं
गजच्छिदांधकच्छिदं तमंतकच्छिदं भजे ॥९॥

अखर्व( अगर्व) सर्वमङ्गलाकलाकदंबमञ्जरी
रसप्रवाहमाधुरी विजृंभणामधुव्रतम् ।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे ॥१०॥

जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमश्वस
द्विनिर्गमत्क्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट् ।
धिमिद्धिमिद्धिमिध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गल
ध्वनिक्रमप्रवर्तित प्रचण्डताण्डवः शिवः ॥११॥

स्पृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजोर्
गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः ।
तृष्णारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः
समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजे ॥१२॥

कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्
विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरः स्थमञ्जलिं वहन् ।
विमुक्तलोललोचनो ललामभाललग्नकः
शिवेति मंत्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम् ॥१३॥

इदम् हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं
पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेतिसंततम् ।
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं
विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिंतनम् ॥१४॥

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं
यः शंभुपूजनपरं पठति प्रदोषे ।
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां
लक्ष्मीं सदैव सुमुखिं प्रददाति शंभुः ॥१५॥

इति श्रीराव कृतम् शिव ताण्डव स्तोत्रम् सम्पूर्णम्

Printed : HIND#BLY : 9319930140